कहानी अप्पूकुट्टन की

चित्र व कथा:
इन्दु हरिकुमार

यह कहानी है एक खास जगह की...

वहाँ लोगों में गहरी
छनती थी और सभी
लोग खुशहाल थे।
वो जवाबों की दुनिया
थी। किसी सवाल के
आते ही लोग उसका
जवाब पाने में जुट
जाते। कोई सवाल
छूट न पाता था।

लेकिन
एक दिन
एक ऐसा सवाल आया
जिसने सब कुछ
बदल डाला।

लोग थमे।
बाल नोचे।
बहुत सिर
खुजलाया।

पर कुछ न सूझा।

हुआ यह
कि सबसे छोटे राजकुमार अप्पूकुट्टन को नाश्ता खिलाने में लगे थे। उधर अप्पूकुट्टन लज़ीज़ नाश्ता गड़पने में लगे थे और इधर राजकुमार के दिमाग में एक कीड़ा कुलबुलाया। सभी हैरान थे कि उसे करें कैसे? यह कोई छोटा-मोटा काम तो नहीं था!

कितना
वज़न होगा
अप्पूकुट्टन का?

वे तोल-मशीन पर खड़ा कर
अप्पूकुट्टन का वज़न क्यों
नहीं ले लेते?
क्या तराजू नहीं थे उनके पास?

जल्दी ही यह
सवाल पहुँचने लगा – राज दरबार में, घरों, सड़क, खेतों, मैदानों में। और सबसे खास
लोगों के दिमागों में।

कुछ तो
अप्पू के लिए
छोटे पड़ गए।

और कुछ

अप्पू के एक पैर रखते ही
टूट गए।

बड़ा सर खपाया उन्होंने।
वे ऐसे लोग न थे कि जल्द
ही हार मान लेते।
इसलिए खास तराजू बनाए गए।

और कुछ
अप्पू के आकार को देखते ही
चकरा गए कि हम कैसे काम करें!

तुम समझ ही गए होगे
कि यहाँ
बात एक हाथी की
हो रही है।

और हाथी भी
कोई ऐसा-वैसा नहीं
खुशहाल राज्य का
खाता-पीता हाथी।

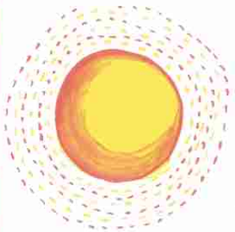

सवाल सभी को हैरान किए था। इतने में एक छोटी-सी
बच्ची मीनू को एक आइडिया आया।
और वो चल दी
राज दरबार की ओर।

राजा ने सुना। सुना और सोचा।
सोचा और आदेश दिया
कि जो यह कहती है वह करके ज़रूर देखें।
हाथी तुले न तुले
कम से कम
इस बच्ची के हिम्मत
और हौंसले को तो
दाद मिलनी ही चाहिए।

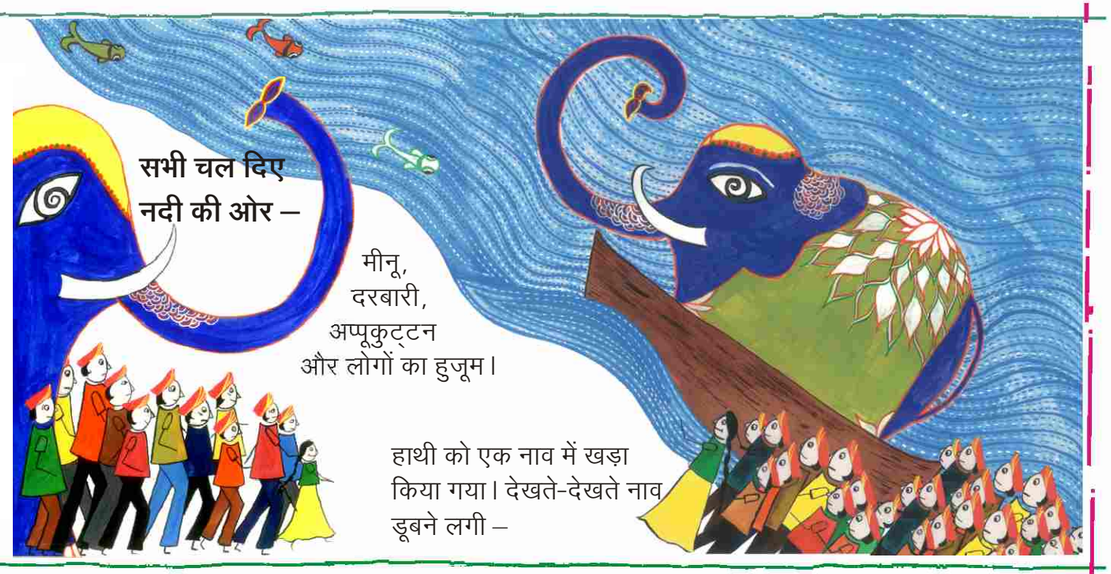

सभी चल दिए
नदी की ओर –

मीनू,
दरबारी,
अप्पूकुट्टन
और लोगों का हुजूम।

हाथी को एक नाव में खड़ा
किया गया। देखते-देखते नाव
डूबने लगी –

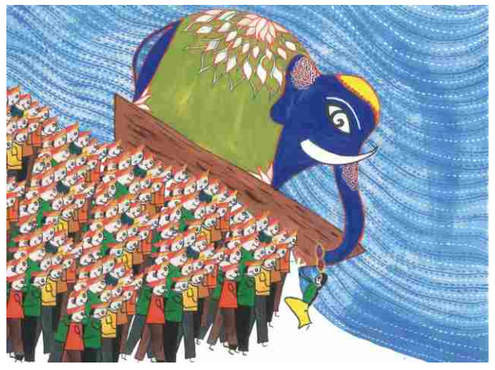

...और...और... और और। जब डूबना और न हुआ
तो मीनू ने वहाँ निशान लगा दिया जहाँ तक नाव
नदी में डूबी थी।

अप्पूकुट्टन
को नाव से
उतारा गया।
नाव में फिर ईंटें रखी गईं।
ईंटें बढ़ती गईं और नाव पानी में डूबने लगी।

...और और ....और और। जब पानी नाव पर
लगे निशान तक पहुँचा तो मीनू चिल्लाई,
"बस बस, अब और ईंटें न रखी जाएँ।"

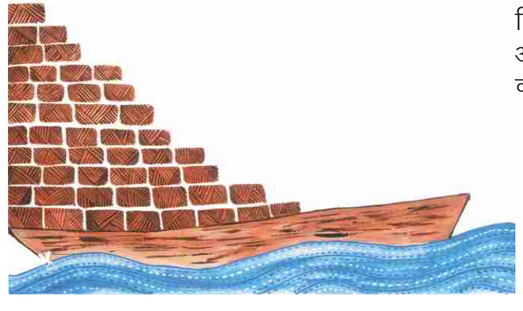

इसके बाद नाव में रखी
ईंटें तोली गईं।
उनका जितना वज़न
निकला उतना ही
अप्पूकुट्टन का
वज़न था।

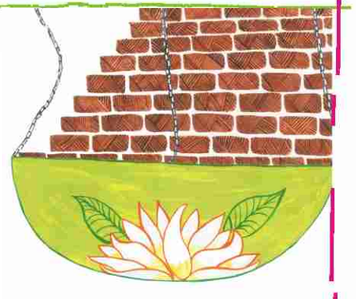

पता है अप्पूकुट्टन का वज़न
कितना निकला?

कहते हैं कि मीनू की तरह ही एक युनानी वैज्ञानिक के सामने भी ऐसी ही एक समस्या रखी गई थी। उनका नाम था – आर्किमिडीज़। कहानी यूँ है कि राजा ने सुनार से एक मुकुट बनवाया। अब राजा को लगा कि शायद इस सुनार ने मुझसे धोखा किया है। और सोने में किसी सस्ती धातु की मिलावट की है। आर्किमिडीज़ से कहा गया कि वह पता करे कि मुकट में मिलावट है या नहीं। शर्त यह थी कि मुकुट नहीं टूटना चाहिए।

इस समस्या को दिमाग में लिए-लिए जनाब नहाने गए। जैसे ही वे पानी भरे टब में उतरे टब में पानी चढ़ गया। उन्हें अचानक ख्याल आया कि इस तरह मुकुट का आयतन निकाला जा सकता है। मुकुट को पानी में डुबोने पर जितना पानी अपनी जगह से हटा उसका वज़न लिया गया। इन दोनों आँकड़ों के बाद मुकुट का घनत्व निकालना कोई समस्या नहीं थी।

$$\text{घनत्व} = \frac{\text{मुकुट का वज़न}}{\text{मुकुट द्वारा हटाए गए पानी का वज़न}}$$

सस्ती या कम घनी धातु की मिलावट वाले मुकुट का घनत्व सोने के मुकुट के घनत्व से कम होगा। आर्किमिडीज़ अपनी खोज से इतने खुश थे कि सड़कों पर युरेका युरेका (मैंने खोज लिया) चिल्लाते हुए दौड़ पड़े।

आर्किमिडीज़ का सिद्धान्त: किसी चीज़ को पानी में रखने पर वह कुछ पानी को अपनी जगह से हटाएगी। इस हटाए गए पानी का वज़न उस चीज़ पर लग रहे उछाल बल के बराबर होगा।

(एक चीनी लोककथा का पुनर्लेखन)